खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 204–205, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9886 वैज्ञानिक लेख

वर्तमान सन्दर्भ में संस्कृत व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

अशोक कुमार दुबे
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
lko_akd@yahoo.com

प्राप्त तिथि–31.07.2017, स्वीकृत तिथि–12.09.2017

सार– भाषा भावों को प्रकट एवं संप्रेषित करने का सशक्त माध्यम है। यदि भाषा शुद्ध होगी तो भावों का प्रकटीकरण शुद्ध होगा, इसके लिए नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है, जिसे व्याकरण कहा जाता है। प्रस्तुत लेख में संस्कृत भाषा के व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा संस्कृत भाषा की अभिनव उपलब्धियों को संदर्भित किया गया है।

बीज शब्द– संस्कृत व्याकरण, भाषा विज्ञान, संप्रेषण।

Sanskrit grammar and linguistics in modern sense

Ashok Kumar Dubey
Associate Professor, Department of Sanskrit
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
lko_akd@yahoo.com

Abstract- Language is a potent medium of expression and communication of thoughts. If language is correct/purified, the expression will also be correct, for this knowledge of rules of that language is an essential requirement. Present article deals with the comparative study of Sanskrit grammar and linguistics as well novel attainments of Sanskrit have been referred and discussed.

Key words- Sanskrit grammar, linguistics, communication.

1. **प्रस्तावना–** प्रस्तुत लेख में संस्कृत व्याकरण और भाषा विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन है जो कि अत्यन्त प्रासंगिक है तथा समकालीन समस्याओं और आधुनिक संस्कृत साहित्य की स्थिति भी प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है। मनुष्यों के भाव प्रकट करने के साधन को 'भाषा' कहते हैं। शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा हम अपने भाव प्रकट कर सकते हैं। यदि भाषा शुद्ध होगी तभी हम अपने भाव को प्रकट कर सकते हैं। भाषा को शुद्ध रखने के लिए नियमों का अनुसरण करना पड़ता है। उन नियमों का पालन न करने से भाषा का रूप बिगड़ जाता है, उन नियमों के भण्डार को व्याकरण कहते हैं।[1] संक्षेप में जिस शास्त्र या विद्या से शब्दों के शुद्ध रूपों व उनके प्रयोगों की विधि का ज्ञान हो उसे व्याकरण कहते हैं। इसलिए संस्कृत भाषा को अच्छी तरह समझने के लिए उसके संस्कृत व्याकरण को जानना आवश्यक है।

2. **संक्षिप्त विश्लेषण–** व्याकरण, भाषा में प्रयुक्त शब्दों की साधुता–असाधुता पर विचार करता है। शुद्ध शब्द क्या है इसका उत्तर देता है किन्तु शब्दों के वे रूप कैसे बने, कहाँ से आये, कब आये और क्यों आये आदि प्रश्नों का समाधान व्याकरण नहीं करता इनका उत्तर हमें भाषा विज्ञान से ही मिलता है। व्याकरण, भाषा विज्ञान के लिए सामग्री जुटाता है जिसके आधार पर भाषा विज्ञान सामान्य सिद्धान्तों का निर्धारण करता है। व्याकरण प्रत्येक भाषा का पृथक–पृथक होता है जबकि भाषा विज्ञान सभी भाषाओं का समान ही होता है व्याकरण की दृष्टि में किसी भी शब्द को केवल व्याकरण निष्पन्न रूप में ही सदा प्रयुक्त किया जाना चाहिए, अन्यथा वह अशुद्ध माना जायेगा। भाषा विज्ञान की दृष्टि में ऐसे विशुद्ध शब्द अपने पूर्ववर्ती शब्दों का विकास है जैसे 'सर्व' शब्द ही शुद्ध है, 'सब्ब' और 'सब' अशुद्ध है किन्तु भाषा विज्ञान की दृष्टि में ये 'सब्ब' और 'सब', 'सर्व' के ही विकसित रूप हैं।[2]

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने द्वारा अशुद्ध ठहराये गये रूपों को भी भाषा विज्ञान द्वारा वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचित होने पर व्याकरण पुनः स्वीकार कर लेता है और उनके प्रयोग के लिए नये नियमों की रचना करता है। भाषा विज्ञान व्याकरण को नई दृष्टि प्रदान करके उसका उपकारी सिद्ध होता है। अतः स्पष्ट है कि संस्कृत व्याकरण और भाषा विज्ञान परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। अब समकालीन समस्यायें क्या थीं और उनका आधुनिक संस्कृत साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा। इस विषय पर ध्यान देना आवश्यक है।

3. **पौराणिक व आधुनिक मान्यतायें–** ऋग्वेद से प्रारम्भ होने वाली साहित्य साधना आज भी निरन्तर आधुनिक संस्कृत साहित्य को जीवित बनाये हुए है। लौकिक संस्कृत साहित्य को वाल्मीकि को आदि कवि तथा उनकी रचना 'रामायणम्'

को आदि काव्य होने का गौरव प्राप्त है। महाकवि कालिदास ने संस्कृत काव्य को उत्कर्ष के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित किया। कालिदास के पश्चात् अनेक कवियों और नाटककारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। मध्ययुग में भी तत्कालीन विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी साहित्य सर्जना होती रही। यद्यपि इस काल में प्रवाह की गति मंथर थी।[3]

आधुनिक युग के संस्कृतज्ञों का दायित्व अब अधिक हो गया है कि संस्कृत साहित्य की महतीय परम्परा को गति, समृद्धि और उत्कर्ष प्रदान करते हुए आने वाली पीढ़ियों का मार्ग दर्शन करें। आधुनिक संस्कृत रचनाकार और पूर्ण समर्पित भाव से अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह भी कर रहे हैं। उन्होंने परम्परा के इस वैशिष्ट्य को सुरक्षित रखते हुए आधुनिकता एवं नवीनता का अपूर्व सम्मिश्रण किया है। इसमें नये–नये विषयों का चयन कर नयी–नयी विधाओं को स्वीकार कर तथा नये–नये बिम्ब आदि काव्य के उपादानों का सुन्दर अभिनव प्रयोग किया है।

4. **निष्कर्ष–** संस्कृत के आधुनिक साहित्य में आधुनिक समाज का यह प्रतिबिम्ब अत्यन्त स्पष्ट है। यहाँ पर आधुनिक कवियों और साहित्यकारों ने जो संस्कृत समाज की दिशा में नवीन कीर्तिमान स्थापित किये हैं उनमें से कुछ लोगों का नाम लेना सर्वथा समीचीन होगा। ये कवि हैं भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, पण्डिता क्षमा राव, वी0 राघवन् जानकीवल्लभ शास्त्री, बच्चूलाल अवस्थी, श्रीनिवास रथ, जगन्नाथ पाठक, रुद्रदेव त्रिपाठी, डॉ0 राजेन्द्र मिश्र एवं राधावल्लभ त्रिपाठी। इन आधुनिक कवियों ने एवं रचनाकारों ने समकालीन समस्याओं को विश्लेषण पूर्व अध्ययन कर उनका निराकरण करते हुए आधुनिक संस्कृत साहित्य को दिशा एवं गति प्रदान की है, जो आज भी जारी है।

सन्दर्भ

1. तिवारी, भोलानाथ(1951) भाषा विज्ञान, प्रथम संस्करण, किताब महल एजेन्सीज, इलाहाबाद।
2. उपाध्याय, बल्देव(1948) संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण, शारदा मन्दिर, काशी।
3. द्विवेदी, कपिल देव(1955) संस्कृत साहित्य का इतिहास, रामनारायण लाल, प्रयाग।